'मकर' लग्न

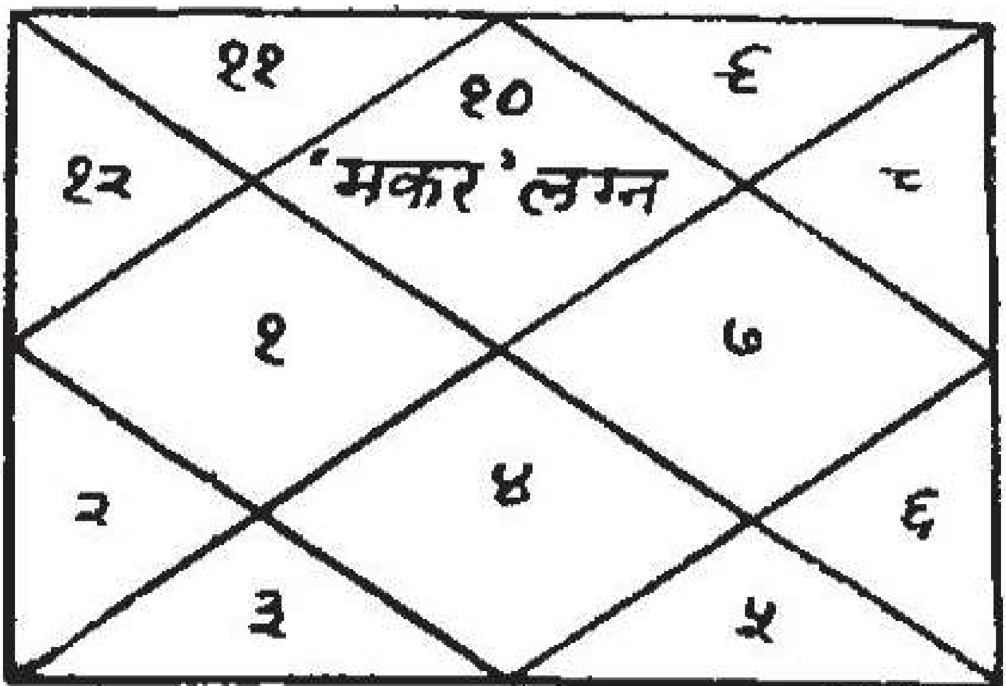

१०९६

['मकर' लग्न की कुण्डलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का पृथक्-पृथक् वर्णन]

'मकर' लग्न का फलादेश

'मकर' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर लम्बा होता है। वह बड़ी-बड़ी आँखों वाला, उग्र स्वभाव का, निरन्तर पुरुषार्थ करने वाला, लोभी, चतुर, वंचक, ठग, पाखण्डी, आलसी, मनमौजी, तमोगुणी तथा कफ-वायु से पीड़ित रहने वाला होता है।

ऐसा व्यक्ति भीरु, सन्तोषी, खर्चीला, लज्जा-रहित, धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला, अधिक सन्ततिवान्, कवियों तथा स्त्रियों में आसक्त भी होता है।

'मकर' लग्न वाला जातक अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सुख भोगता है, मध्यमावस्था में दुःख पाता है तथा ३२ वर्ष की आयु के बाद अन्तिम समय तक सुखी बना रहता है।

ऐसे व्यक्ति की आयु पूर्ण होती है तथा उसका भाग्योदय प्रायः ३२-३३ वर्ष की अवस्था में होता है।

'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित-विभिन्न ग्रहों का स्थायी फलादेश आगे दी गई उदाहरण-कुण्डलियों में संख्या ३३४ से ४४१ के बीच देखना चाहिए।

गोचर कुण्डली के ग्रहों का फलादेश किन उदाहरण-कुण्डलियों में देखें, इसे आगे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

'मकर' लग्न में 'सूर्य' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या १०९७ से ११०८ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'सूर्य'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १०९७
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १०९८
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या १०९९
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११००
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०१
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०२
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०४
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०५
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०७
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०८

'मकर' लग्न में 'चन्द्रमा' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११०९ से ११२० के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों की गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध'

का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'चन्द्रमा'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११०९
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११०
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११११
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११२
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११३
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११४
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११६
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११७
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या १११८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित तो हो संख्या १११९
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२०

'मकर' लग्न में 'मंगल' का फलादेश

१—'मंगल' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११२१ से ११३२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मंगल' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'मङ्गल'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२१
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२२
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२३
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२४
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२५
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२६
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२८
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११२९
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३१
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११३२

'कर्क' लग्न में 'बुध' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों की अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११३३ से ११४४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में बुध—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११३३
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११३४
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११३५
(घ) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ११३६
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११३७
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ११३८
(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ११३९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ११४०
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ११४१
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ११४२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ११४३
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ११४४

'मकर' लग्न में 'गुरु' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११४५ से ११५६ के बीच देखना चाहिए।

२—'कर्क' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'गुरु'—

(क) 'मेष' राशि पर हो तो संख्या ११४५
(ख) 'वृष' राशि पर हो तो संख्या ११४६
(ग) 'मिथुन' राशि पर हो तो संख्या ११४७
(ज) 'कर्क' राशि पर हो तो संख्या ११४८
(ङ) 'सिंह' राशि पर हो तो संख्या ११४९
(च) 'कन्या' राशि पर हो तो संख्या ११५०

(छ) 'तुला' राशि पर हो तो संख्या ११५१
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर हो तो संख्या ११५२
(झ) 'धनु' राशि पर हो तो संख्या ११५३
(ञ) 'मकर' राशि पर हो तो संख्या ११५४
(ट) 'कुम्भ' राशि पर हो तो संख्या ११५५
(ठ) 'मीन' राशि पर हो तो संख्या ११५६

'मकर' लग्न में 'शुक्र' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११५७ से ११६८ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस महीने में 'शुक्र'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५७
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५८
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११५९
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६०
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६१
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६२
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६३
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६४
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६५
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६६
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६७
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६८

'मकर' लग्न में 'शनि' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११६९ से ११८० के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'शनि'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११६९

(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७०
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७१
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७२
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७३
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७४
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७५
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७६
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७७
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७८
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११७९
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८०

'मकर' लग्न में 'राहु' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११८१ से ११८२ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'राहु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८१
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८२
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८३
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८४
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८५
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८६
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८७
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८८
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११८९
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९०
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९१
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९२

'मकर' लग्न में 'केतु' का फलादेश

१—'मकर' लग्न वालों को अपनी जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुण्डली संख्या ११९३ से १२०४ के बीच देखना चाहिए।

२—'मकर' लग्न वालों को गोचर-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश निम्नलिखित उदाहरण-कुण्डलियों में देखना चाहिए—

जिस वर्ष में 'केतु'—

(क) 'मेष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९३
(ख) 'वृष' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९४
(ग) 'मिथुन' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९५
(घ) 'कर्क' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९६
(ङ) 'सिंह' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९७
(च) 'कन्या' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९८
(छ) 'तुला' राशि पर स्थित हो तो संख्या ११९९
(ज) 'वृश्चिक' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२००
(झ) 'धनु' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०१
(ञ) 'मकर' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०२
(ट) 'कुम्भ' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०३
(ठ) 'मीन' राशि पर स्थित हो तो संख्या १२०४

●

'मकर' लग्न में 'सूर्य'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : सूर्य

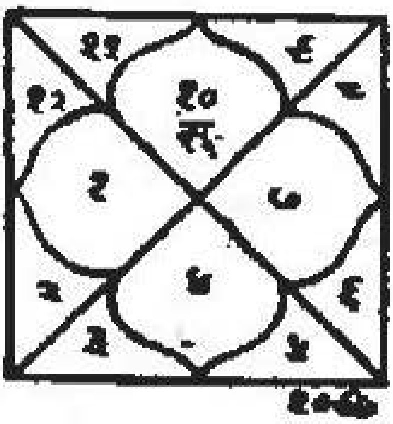

१२०५

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा कभी-कभी विशेष शारीरिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है, परन्तु आयु एवं पुरातत्व की वृद्धि होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के पक्ष में सामान्य कठिनाई रहती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कुछ परेशानियाँ आती रहती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : सूर्य

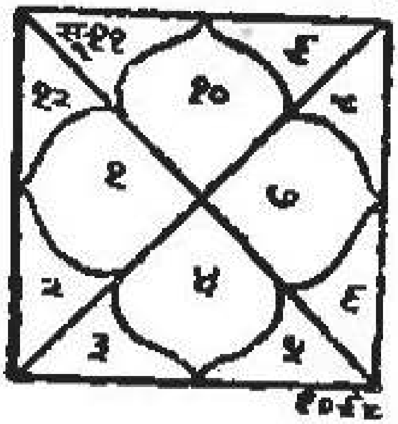

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक धन का संचय नहीं कर पाता। तथा कुटम्ब के सुख में भी संकट आते रहते हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन बिताता तथा शान-शौकत में खर्च करता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : सूर्य

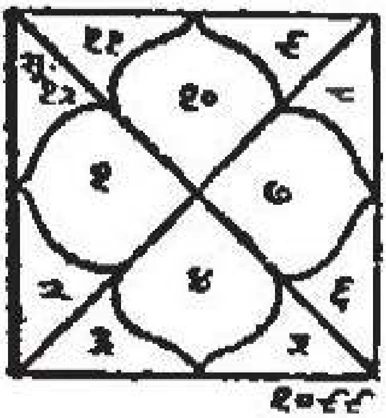

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में कुछ रुकावटें आती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कमी बनी रहती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : सूर्य

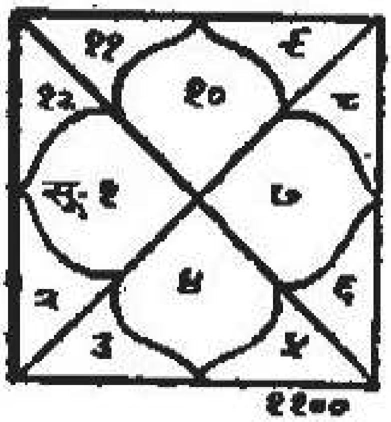

चौथे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित उच्च के 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। आयु तथा पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। दैनिक जीवन अमीरी ढंग का रहता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता के सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय की उन्नति में रुकावटें आती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : सूर्य

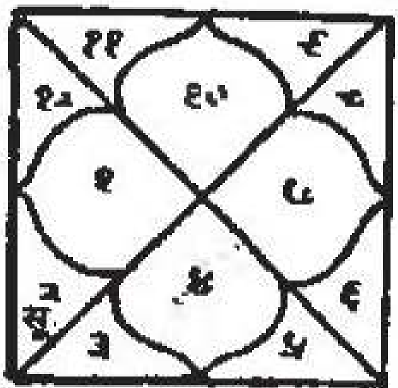

११०१

पाँचवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में कठिनाई रहती है। बुद्धि भी कमजोर रहती है। ऐसा व्यक्ति चिन्तातुर तथा स्वभाव का क्रोधी होता है। उसे आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ-प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तभी सफलता मिल पाती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : सूर्य

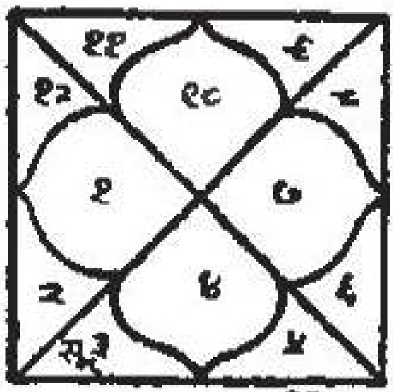

११०२

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर हमेशा विजय प्राप्त करता है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में असन्तोष भी रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : सूर्य

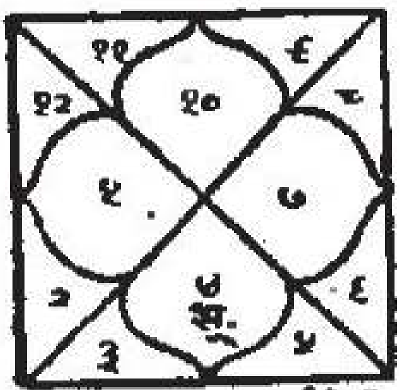

११०३

सातवें भाव में मित्र चन्द्रमा की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा कभी-कभी बहुत हानि भी उठानी पड़ती है। आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है तथा कभी-कभी   शिकार भी बनना पड़ता है।

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘अष्टमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : सूर्य

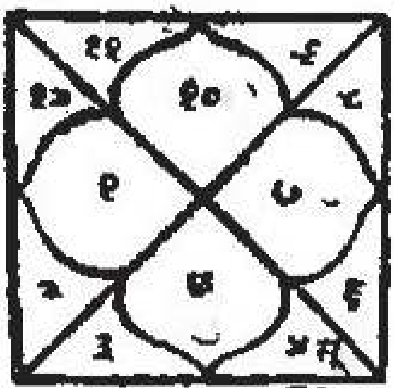

१२०४

आठवें भाव में स्वराशि में स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व की विशेष शक्ति प्राप्त होता है। वह बड़ा स्वाभिमानी, तेजस्वी, निडर तथा बहादुर होता है। उसका दैनिक जीवन भी बड़ा प्रभावपूर्ण रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन संचय में परेशानी रहती है तथा कौटुम्बिक सुख में बाधाएँ आती हैं।

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘नवमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : सूर्य

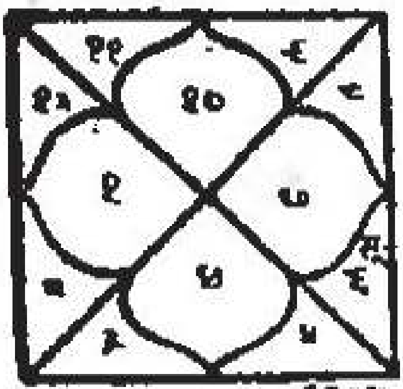

१२०५

नवें भाव में मित्र ‘बुध’ की राशि पर स्थित ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति कुछ रुकावटों के साथ होती है। धर्म-पालन में भी थोड़ी त्रुटि रहती है तथा यश में भी कमी आती है। आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। जिससे जातक रईसी ढंग का जीवन व्यतीत करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम की समुचित वृद्धि नहीं हो पाती।

‘मकर’ लग्न की कुण्डली के ‘दशमभाव’ स्थित ‘सूर्य’ का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : सूर्य

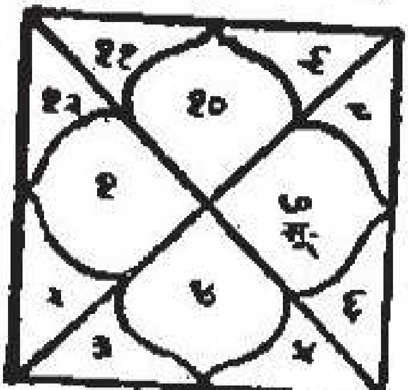

१२०६

दसवें भाव में शत्रु ‘शुक्र’ की तुला राशि पर स्थित नीच के ‘सूर्य’ के प्रभाव से जातक को पिता पक्ष से घोर कष्ट उठाना पड़ता है। राज्य पक्ष से प्रतिष्ठा में कमी तथा व्यवसाय-पक्ष में बाधाओं का का सामना करना पड़ता है। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति को भी कुछ हानि होती है।

सातवीं नीच तथा उच्च-दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : सूर्य

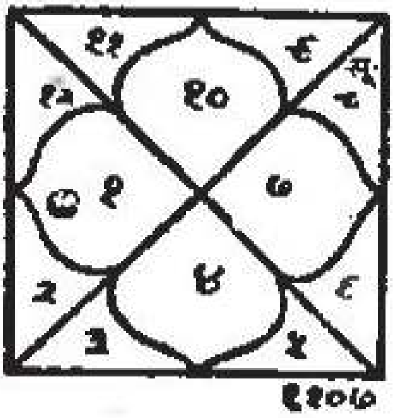

ग्यारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है, परन्तु कभी-कभी कुछ कठिनाइयाँ भी आती हैं। आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति का विशेष लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से कष्ट रहता है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। ऐसा व्यक्ति उग्र स्वभाव का होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'सूर्य' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : सूर्य

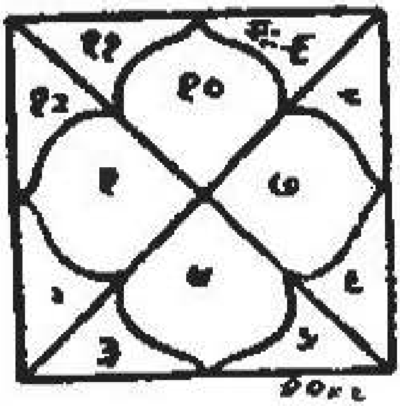

बारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'सूर्य' के प्रभाव से जातक को खर्च तथा बाहरी सम्बन्धों में कठिनाई उपस्थित होती है। पेट में विकार भी रहता है। आयु तथा पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है तथा झगड़े-टंटे स्वयं ही दूर होते रहते हैं।

'मकर' लग्न में 'चन्द्रमा'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : चन्द्र

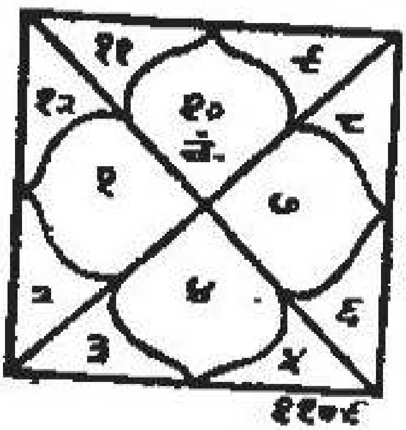

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है। वह विनोदी, मानी, यशस्वी तथा कार्य-कुशल भी होता है

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री सुन्दर, सुयोग्य तथा स्वाभिमानिनी मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : चंद्र

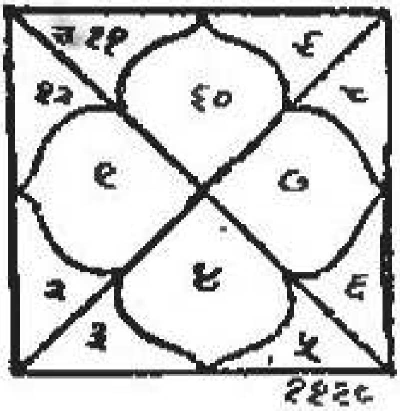

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुम्ब की वृद्धि होती है, परन्तु स्त्री के कारण कुछ परेशानी का अनुभव भी होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। ऐसे व्यक्ति का रहन-सहन अमीरी ढंग का होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : चंद्र

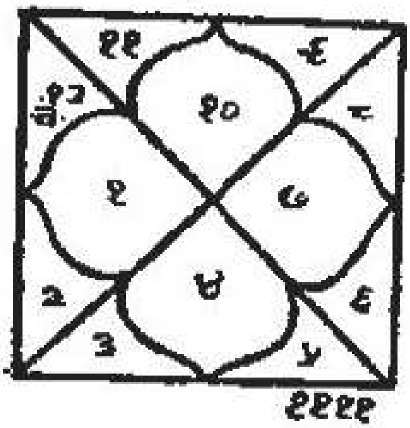

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का श्रेष्ठ सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। स्त्री, व्यवसाय तथा कुटुम्ब का सुख भी अच्छा रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, सुखी तथा सम्पन्न होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : चंद्र

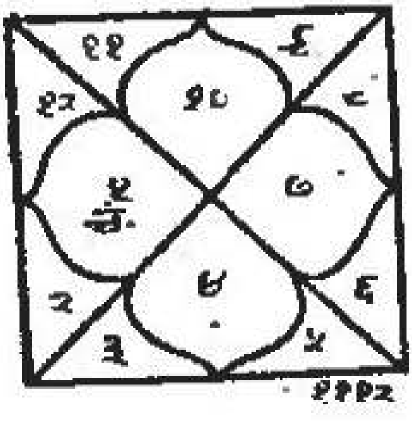

चौथे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। घरेलू वातावरण आनन्दमय रहता है। स्त्री सुन्दर मिलती है, व्यवसाय में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा स्थायी व्यवसाय के क्षेत्र में यश, प्रतिष्ठा, सहयोग, धन तथा अन्य लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न: पंचमभाव :चंद्र

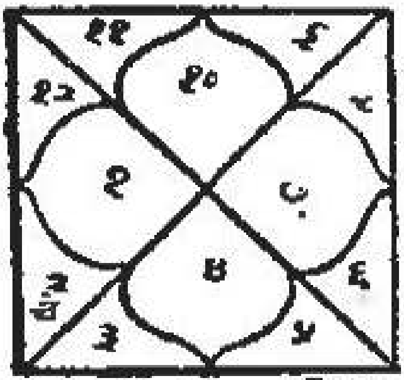

१११२

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं सन्तान के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष से भी सुख मिलता है।

सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कुछ रुकावटें आती हैं। ऐसा व्यक्ति हँसमुख तथा हाजिरजवाब भी होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न: षष्ठभाव :चंद्र

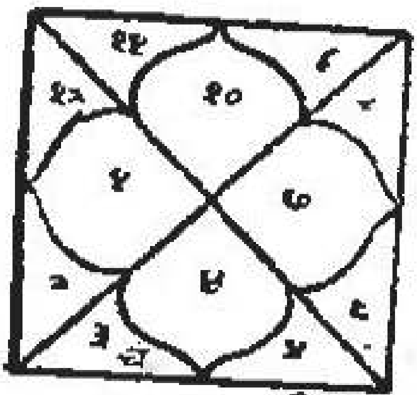

१११४

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में मित्रता से काम निकालता है। स्त्री से विरोध तथा व्यवसाय में कठिनाई का सामना भी करना पड़ता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ भी मिलता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न: सप्तमभाव: चंद्र

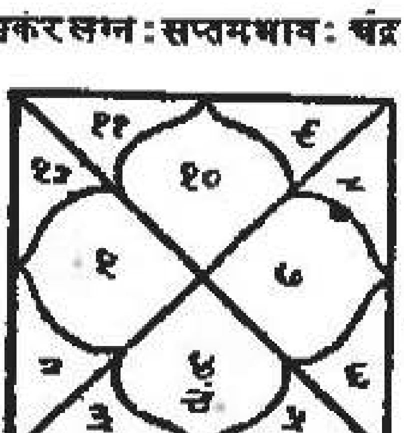

१११५

सातवें भाव में स्वराशि में स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को सुन्दर स्त्री तथा उसके द्वारा यथेष्ट सुख की प्राप्ति होती है। व्यवसाय में भी पूर्ण सफलता मिलती है। घरेलू जीवन आनन्दमय बना रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव में कुछ असंतोषपूर्ण वृद्धि होती है। यश तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी असंतोष बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : अष्टमभाव : चंद्र

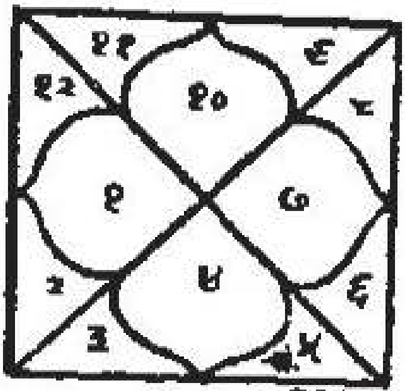

११२६

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का यथेष्ट लाभ होता है, परन्तु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। गृहस्थी का सुख भी कम रहता है। मन में अशान्ति रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख कुछ कठिनाइयों के साथ प्राप्त होता है। वैसे दैनिक जीवन ठाठ-बाट का रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : नवमभाव : चंद्र

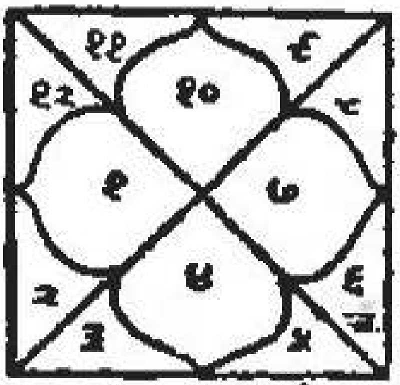

११२७

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है तथा धर्म में भी अत्यधिक रुचि बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, न्यायी तथा धर्मात्मा होता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : दशमभाव : चंद्र

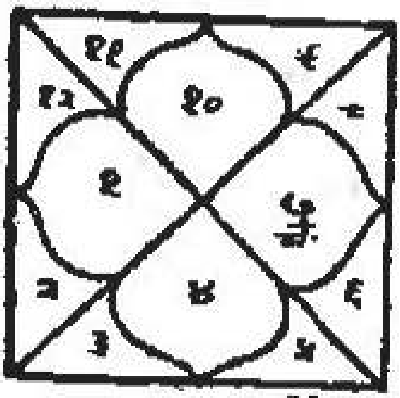

११२८

दसवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा सहयोग, राज्य से प्रतिष्ठा तथा व्यवसाय से लाभ की प्राप्ति होती है। मनोबल बढ़ा रहता है। स्त्री सुन्दर तथा स्वाभिमानिनी मिलती है। घरेलू जीवन उल्लासपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी यथेष्ट मिलता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा भाग्यशाली होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : एकादशभाव : चंद्र

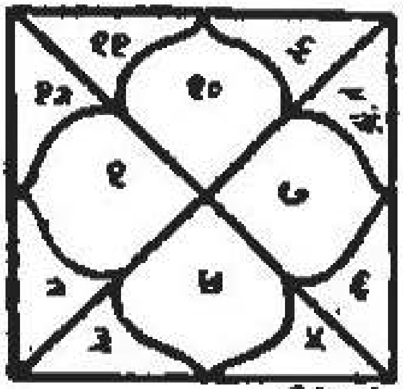

१११९

ग्यारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक की आमदनी में कुछ कमी रहती है। स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी अल्प सुख मिलता है। गृहस्थी के कारण चिंताओं का शिकार बनना पड़ता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि तथा तथा सन्तान का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'चन्द्रमा' का फलादेश

मकर लग्न : द्वादशभाव : चंद्र

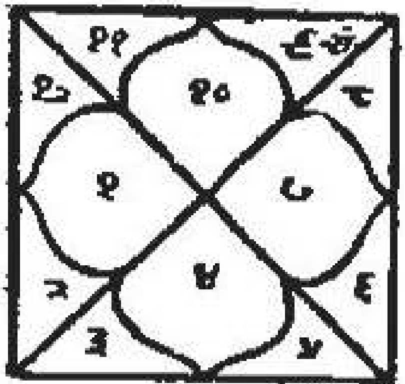

११२०

बारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'चन्द्रमा' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता रहता है। स्त्री-सुख में कमी रहती है तथा दैनिक व्यवसाय में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। इसी से मन चिंतित तथा अशान्त बना रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष एवं झगड़े के मामलों में जातक विनम्रता से काम निकालकर अपना प्रभाव भी स्थापित करता है।

'मकर' लग्न में 'मंगल'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकर लग्न : प्रथमभाव : मंगल

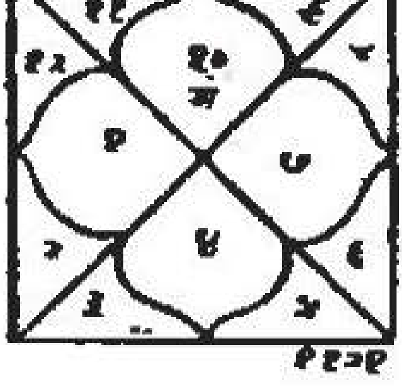

११२१

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित उच्च के 'मंगल' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं शक्ति में वृद्धि होती है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का अच्छा सुख प्राप्त होता है। रहन-सहन ठाठ-बाट का होता है।

सातवीं नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय-पक्ष में कठिनाइयाँ आती हैं। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा चतुर होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : मंगल

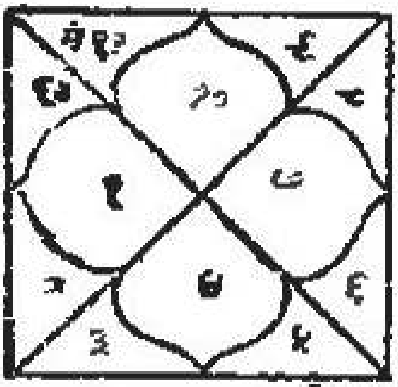

१९२२

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को धन-कुटुम्ब का पर्याप्त सुख सामान्य असंतोष के साथ प्राप्त होता है, परन्तु माता के सुख में कमी रहती है। भूमि एवं भवन का लाभ होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की उन्नति होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति बढ़ती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने आर्थिक लाभ का अधिक ध्यान रखता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : मंगल

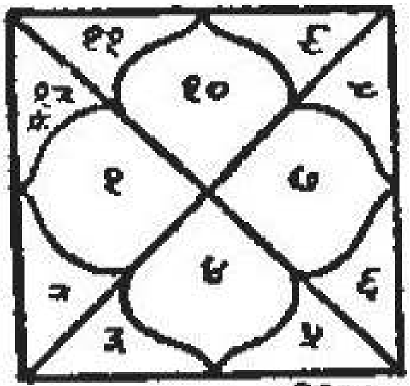

१९२३

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहिनों का सुख भी मिलता है। माता, भूमि, भवन का सुख प्राप्त होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। ऐसा व्यक्ति बहादुर तथा हिम्मती भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। आठवीं सामान्य शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से कुछ कमियों के साथ पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : मंगल

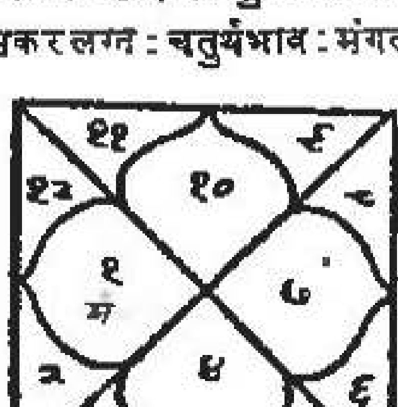

१९२४

चौथे भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का विशेष सुख प्राप्त होता है। चौथी नीच-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के सुख में कमी रहती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं।

सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी खूब रहती है तथा लाभ के साधन सरलता से मिलते रहते हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : मंगल

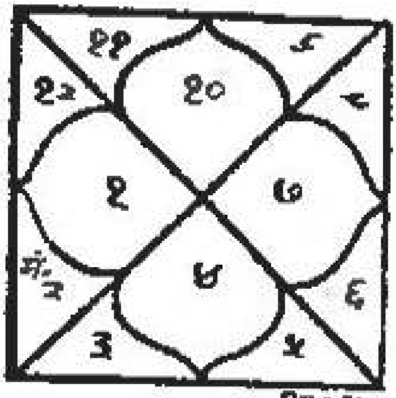

११२५

पाँचवें भाव में सामान्य मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा सन्तान-सुख का लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन का सुख भी मिलता है। चौथी मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : मंगल

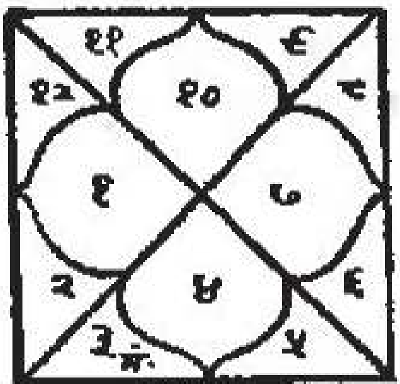

११२६

छठे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़ों से लाभ उठाता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है तथा आमदनी के मार्ग में कठिनाइयाँ आती रहती हैं। चौथी मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि के द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। आठवीं उच्च दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य स्वास्थ्य, एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : मंगल

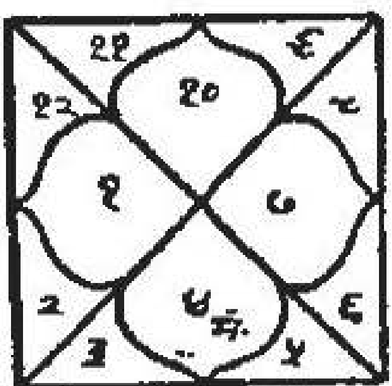

११२७

सातवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित नीच के 'मंगल' के प्रभाव से जातक की स्त्री-पक्ष तथा गृहस्थी के सुख में कमी रहती है। व्यवसाय माता, भूमि तथा भवन का सुख भी कमजोर रहता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं गौरव की वृद्धि होती है। आठवीं शत्रु-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से धन-संचय में कठिनाइयाँ आती हैं तथा कुटुम्ब का सामान्य सुख प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : मंगल

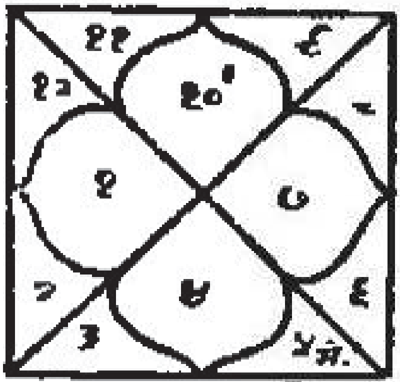

७१२८

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है, परन्तु माता, भूमि एवं भवन का सुख कुछ दुर्बल रहता है। चौथी दृष्टि से स्वराशि में एकादशभाव को देखने से आमदनी बहुत अच्छी रहती है। सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से कुछ कमियों के साथ धन-संचय में सफलता मिलती है तथा कुटुम्ब का सुख सामान्य रहता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : मंगल

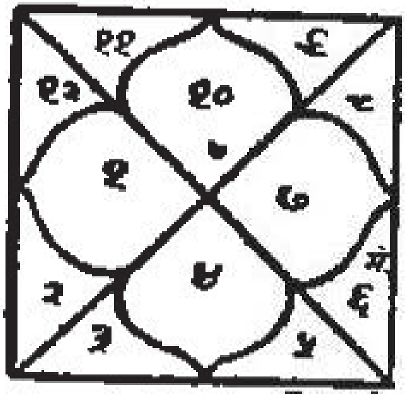

१२२९

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। वह धनी, यशस्वी, धर्मात्मा तथा न्यायप्रिय होता है। चौथी मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति धनी, यशस्वी, सुखी, पराक्रमी तथा विनोदी होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : मंगल

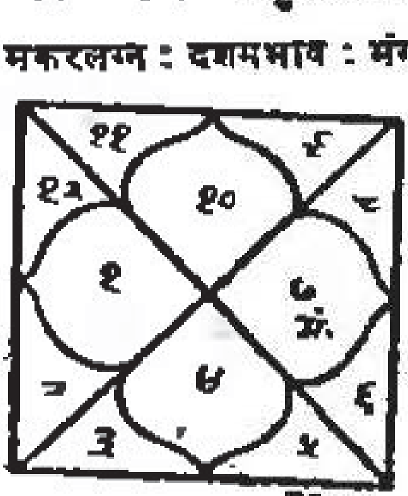

१२३०

दसवें भाव में सामान्य शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। चौथी शत्रु-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने के शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव में वृद्धि होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने के माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है। आठवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान-पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : मंगल

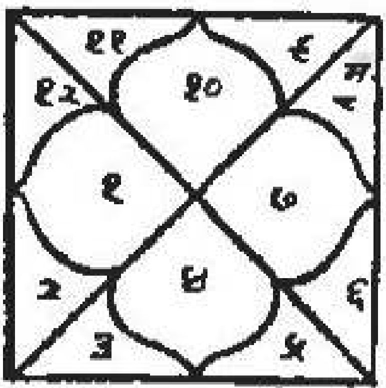

११३१

ग्यारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती होती है। माता, भूमि तथा भवन का यथेष्ट सुख भी प्राप्त होता है। चौथी शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन और कुटुम्ब का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।

सातवीं सामान्य मित्र-दृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि तथा सन्तान का श्रेष्ठ सुख मिलता है। आठवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर अत्यधिक प्रभाव रहता है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'मंगल' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : मंगल

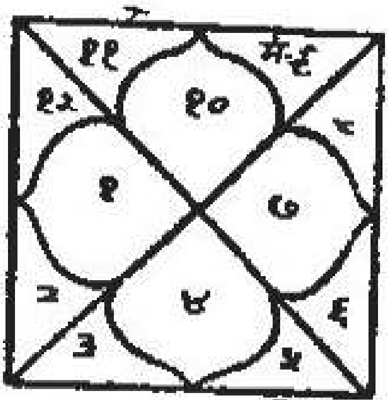

११३२

बारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। चौथी मित्र-दृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बना रहता है। आठवीं नीच-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री के सुख में कुछ कमी आती है तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ हानि उठानी पड़ती है।

'मकर' लग्न में 'बुध'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : बुध

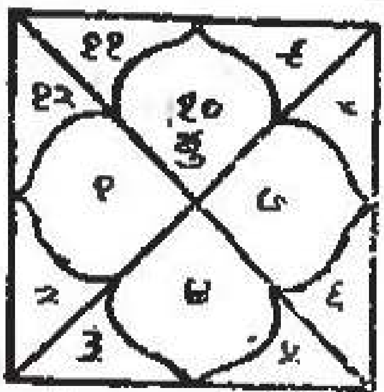

११३३

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक के शारीरिक प्रभाव एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। वह शत्रु-पक्ष पर स्वविवेक से प्रभाव स्थापित करता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है, परन्तु व्यवसाय में कभी-कभी कठिनाइयाँ भी आती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न: द्वितीयभाव : बुध

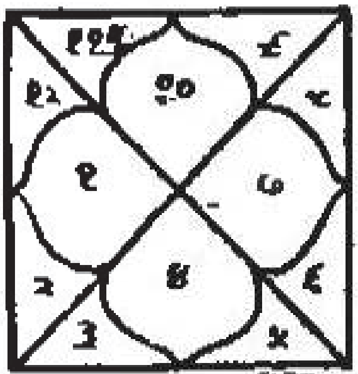

११३४

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'बुध' से प्रभाव से जातक के धन तथा कौटुम्बिक सुख की वृद्धि होती है। मान, प्रतिष्ठा तथा धर्म में रुचि भी रहती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। परन्तु कभी-कभी भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ भी आती रहती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : बुध

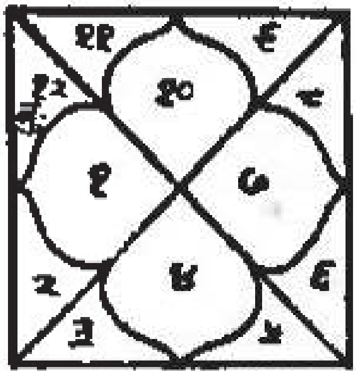

११३५

तीसरे भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता है। भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में भी कठिनाइयाँ आती हैं। शत्रु पक्ष से भी कुछ परेशानी होती है।

सातवीं उच्च-दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से स्वविवेक-बुद्धि द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती रहती है।

मकर' लग्न की कुण्डली से 'चतुर्थभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : बुध

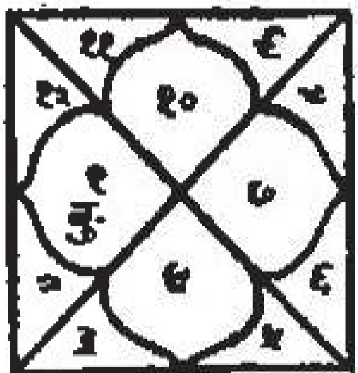

११३६

चौथे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन का सुख प्राप्त होता है तथा भाग्य की भी उन्नति होती है। घरेलू सुख-शान्ति में कुछ विघ्न आते हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा शत्रु-पक्ष में विजय प्राप्त होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : बुध

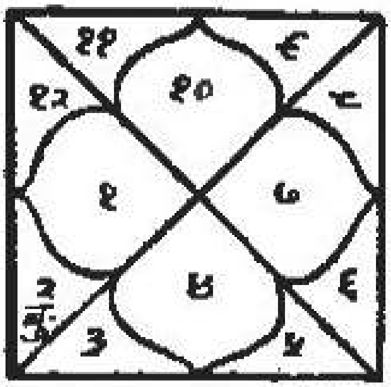

११३७

पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाइयों के साथ सन्तान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। वह स्वपरिश्रम से आमदनी तथा धर्म की उन्नति भी करता है। शत्रु-पक्ष में भी सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से भाग्य की शक्ति में यथेष्ट वृद्धि होती है।

मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : बुध

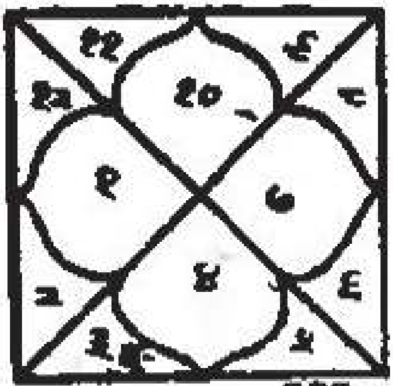

११३८

छठे भाव में स्वराशि में स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। भाग्य तथा धर्म की उन्नति में कुछ कठिनाइयाँ तो आती हैं, परन्तु बाद में वे दूर भी हो जाती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ तथा सुख भी मिलता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'बुध'-का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : बुध

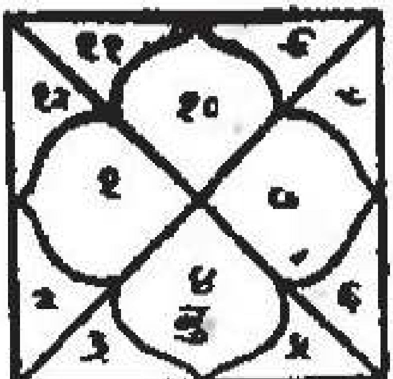

११३९

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक स्वविवेक द्वारा भाग्य की अत्यधिक उन्नति करता है तथा व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है। स्त्री-पक्ष से अशान्ति मिलती है। व्यवसाय-पक्ष में कुछ कठिनाइयों साथ विशेष लाभ भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक प्रभाव तथा यश की वृद्धि होती है। कभी-कभी बीमारियाँ तो आ घेरती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : बुध

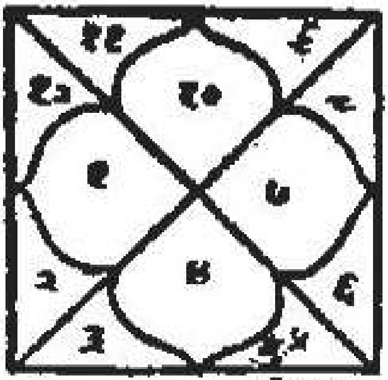

१२५०

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। भाग्योन्नति में बहुत बाधाएँ आती हैं तथा यश में भी कमी रहती है। शत्रु-पक्ष से भी अशान्ति मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है तथापि दैनिक जीवन प्रभावपूर्ण बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : बुध

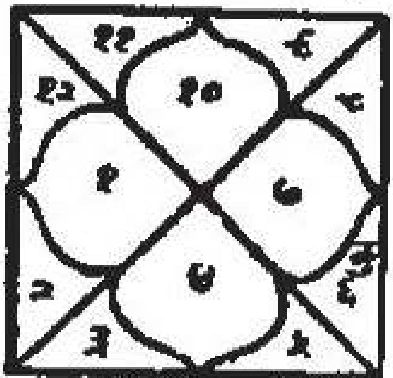

१२५१

नवें भाव में स्वराशि स्थित उच्च के 'बुध' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की विशेष उन्नति होती है। शत्रु-पक्ष पर सफलता प्राप्त होती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

सातवीं नीचदृष्टि से तृतीय भाव को देखने के कारण भाइयोंसे विरोध रहता है तथा भाई-बहिन के सुख में कमी आती है। पराक्रम भी शिथिल बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : बुध

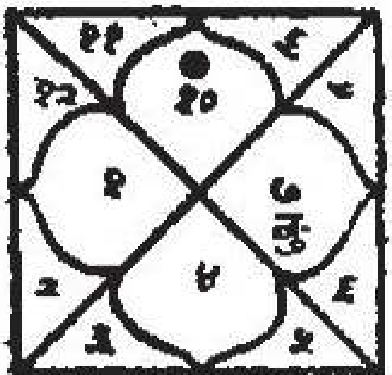

१२५२

दसवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ, प्रतिष्ठा, सहयोग तथा यश की प्राप्ति होती है। शत्रु-पक्ष पर विजय तथा धनोपार्जन में सफलता मिलती है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है, परन्तु उन्नति के मार्ग में रुकावटें भी आती रहती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : बुध

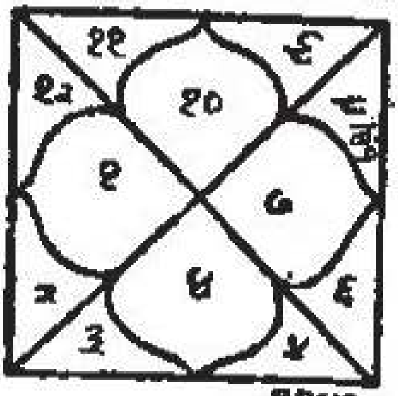

१२८३

ग्यारहवें भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है तथा शत्रु-पक्ष में सफलता मिलती है। विवेक तथा परिश्रम द्वारा भाग्य की विशेष उन्नति होती है। स्वार्थयुक्त धर्म का पालन भी होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ सफलता मिलती है, परन्तु विद्या-बुद्धि की विशेष उन्नति होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : बुध

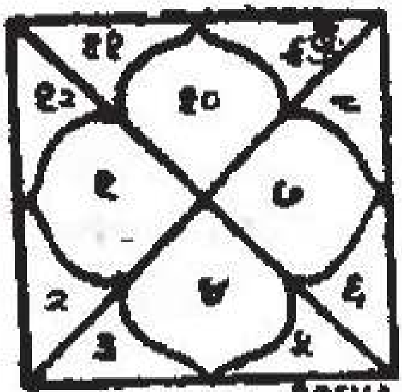

१२८४

बारहवें भाव में मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित 'बुध' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु उसकी पूर्ति बिना किसी कठिनाई के होती रहती है। बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से लाभ होता है। भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं तथा यश की कमी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष से कुछ कठिनाई होती है, परन्तु भाग्य-बल से वह उन पर विजय भी पा लेता है।

'मकर' लग्न में 'गुरु'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : बुध

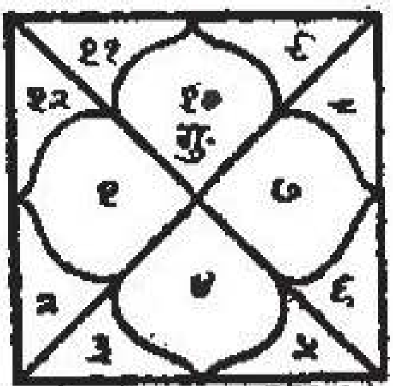

१२८५

पहले भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित नीच के 'बुध' के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल रहता है। भाई-बहिन के सुख में कमी आती है एवं पराक्रम भी अल्प रहता है। खर्च चलाने में कठिनाई होती है तथा बाहरी स्थानों का सम्बन्ध भी असंतोषजनक रहता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है तथा सन्तान-पक्ष से सुख-दुःख दोनों ही मिलते हैं।

सातवीं उच्च-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। नवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति में न्यूनाधिकता होती रहती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वितीयभाव : गुरु

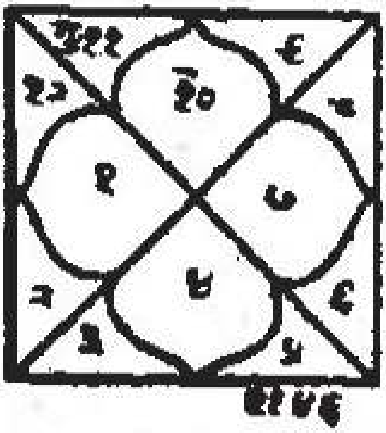

दूसरे भाव में शत्रु 'शनि' की राशि पर स्थित व्ययेश गुरु के प्रभाव से जातक के धन-संग्रह में कमी आती है तथा कुटुम्ब से भी परेशानी रहती है। खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में बुद्धिमानी से काम निकलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का कुछ लाभ मिलता है। नवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य सफलताएँ मिलती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : गुरु

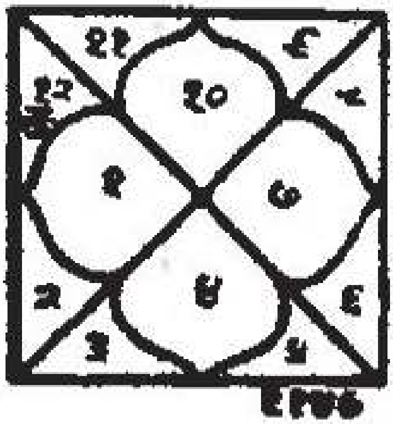

तीसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों का सुख मिलता है, परन्तु पुरुषार्थ में कमी आती है। खर्च ठीक से चलता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता है। पाँचवीं उच्च तथा मित्र-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से सुन्दर स्त्री मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में उतार-चढ़ाव आते हैं।

नवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी श्रेष्ठ रहती है। ऐसा व्यक्ति सुखी जीवन बिताता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : गुरु

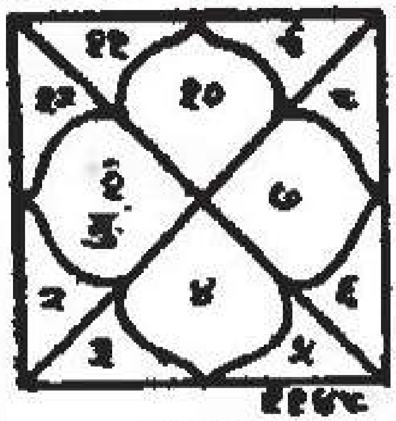

चौथे भाव में मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन के सुख में तथा भाई-बहिन के सुख में भी कुछ कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है।

नवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से घर-बैठे ही लाभ प्राप्त होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : गुरु

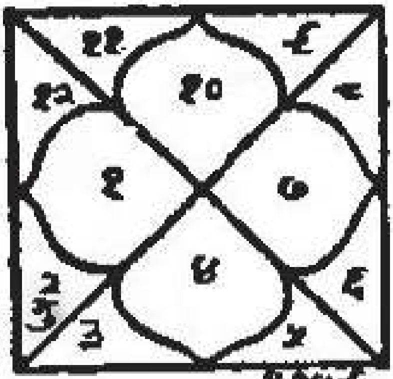

११४९

पाँचवें भाव में शत्रु 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से न्यूनाधिक लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। बुद्धि-बल से खर्च चलता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है। भाई-बहिनों से सामान्य सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। नवीं नीच-दृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : गुरु

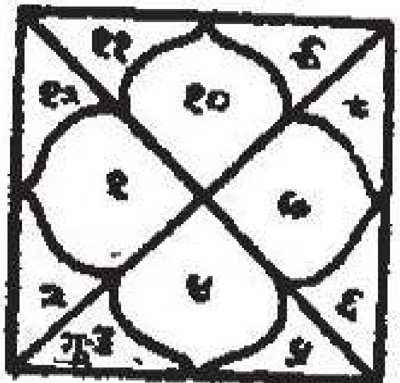

११५०

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से खर्च की शक्ति से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है। भाई-बहिनों से सामान्य विरोध रहता है तथा पराक्रम में कमी आती है।

पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयाँ रहती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ होता है।

नवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख की वृद्धि के लिए अत्यधिक परिश्रम करने पर भी कष्ट ही मिलता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : बुध

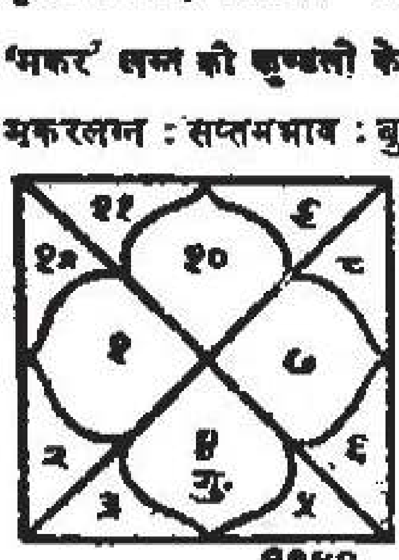

११५१

सातवें भाव में मित्र 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित उच्च के 'गुरु' के प्रभाव से जातक को सुन्दर पत्नी मिलती है तथा स्त्री और व्यवसाय से सुख प्राप्त होता है। बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता है तथा खर्च अधिक रहता है।

पाँचवीं मित्र-दृष्टि से एकादश भाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है। सातवीं नीच तथा शत्रु-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी आती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : गुरु

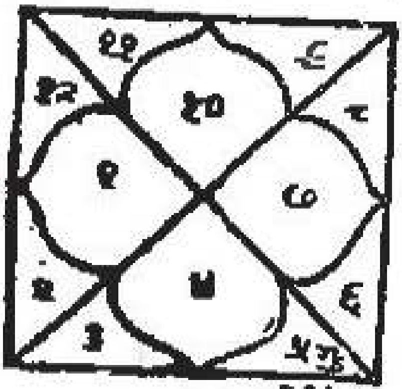

११५२

आठवें भाव में मित्र 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'गुरु' से प्रभाव से जातक की आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती है। पाँचवी दृष्टि से स्वराशि में द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक होता है तथा बाहरी सम्बन्धों से लाभ रहता है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीय भाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में कुछ कमी रहती है। नवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : बुध

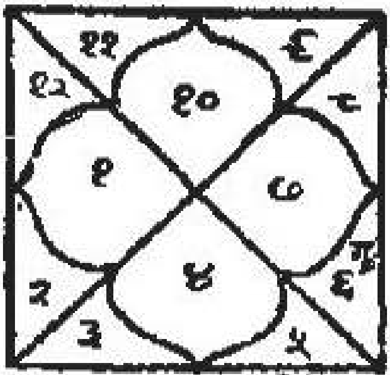

११५३

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'बुध' में प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कमजोरी रहती है। बाहरी सम्बन्धों से कुछ लाभ होता है जिससे खर्च चलता रहता है। पाँचवीं नीच-दृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है। धन भी अशान्त रहता है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से, भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में सामान्य वृद्धि होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में स्व-विवेक-बुद्धि से सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'बुध' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : गुरु

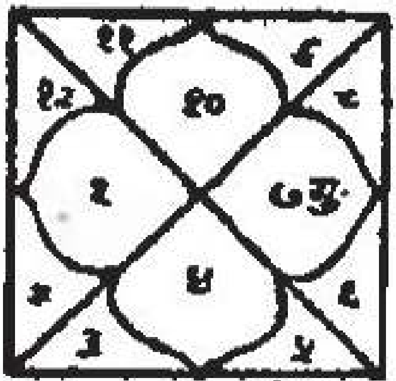

११५४

दसवें भाव में शत्रु 'शुक' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कमी रहती है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है, जिसके कारण खर्च अच्छी तरह चलता है। बाहरी स्थानों से लाभ होता रहता है। पाँचवीं शत्रु-दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कौटुम्बिक सुख में कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता के सुख में कमी रहती है, परन्तु भूमि तथा भवन का सुख खर्च के बल पर मिलता है। नवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर बुद्धिमानी से प्रभाव स्थापित होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : बुध

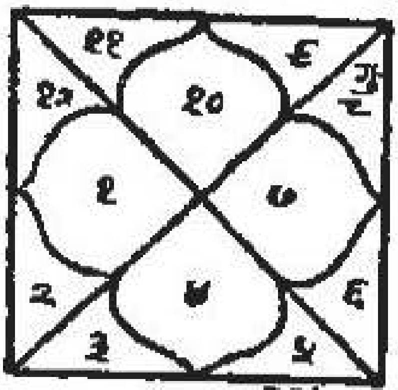

११५५

ग्यारहवें भाव मे मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। बाहरी सम्बन्धों से भी लाभ होता है, अतः खर्च आराम से चलता है। पाँचवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान-पक्ष में असन्तोष रहता है, परन्तु विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। नवीं उच्च-दृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री का सुख मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'गुरु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : बुध

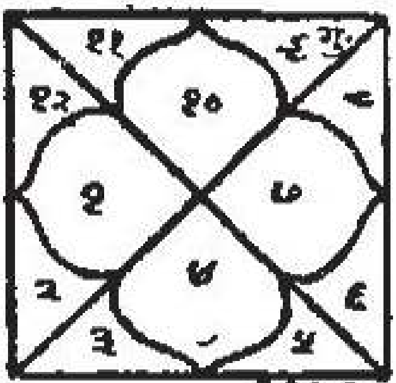

११५६

बारहवें भाव में स्वराशि-स्थित 'गुरु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है। भाई-बहिनों के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है। पाँचवीं मित्र-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन का सामान्य सुख मिलता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर युक्तिपूर्वक प्रभाव स्थापित होता है। नवीं मित्र-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ कमी के साथ होता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति शानदार खर्च करता तथा समाज में प्रभावशाली बना रहता है।

'मकर' लग्न में 'शुक्र'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : शुक्र

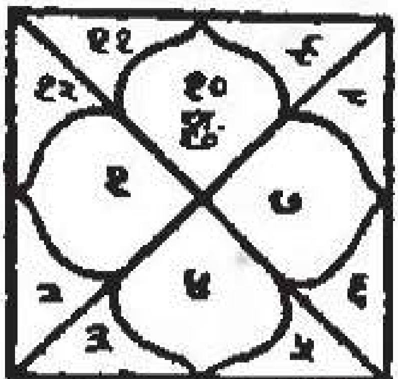

११५७

पहले भाव में मित्र शनि की राशि-पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौन्दर्य, प्रभाव एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रों में भी सफलता मिलती है। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। सन्तान से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है।

सातवीं मित्र-दृष्टि से सप्तमभाव को देखने से पत्नी सुन्दर तथा योग्य मिलती है तथा दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में भी लाभ होता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : द्वितीयभाव : शुक्र

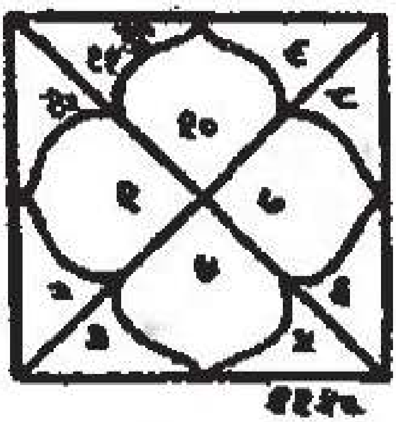

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब का पर्याप्त सुख मिलता है। पिता, व्यवसाय तथा राज्य के क्षेत्रों से भी लाभ होता है, परन्तु सन्तान-पक्ष में कुछ कठिनाई रहती है।

सातवीं शत्रु-दृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व में कुछ कमी आती है।

ऐसा व्यक्ति धनी और यशस्वी होता है परन्तु चिन्तित रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : शुक्र

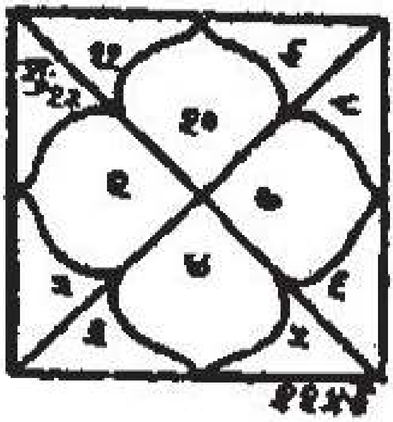

तीसरे भाव में सामान्य मित्र 'गुरु' की राशि पर स्थित उच्च के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई-बहिन का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। विद्या एवं संतान का लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं नीच-दृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में कुछ कमी रहती है तथा यश भी कम मिल पाता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : शुक्र

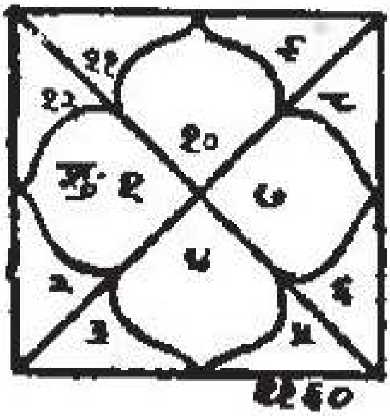

चौथे भाव में सामान्य मित्र 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। बुद्धि योग से आमदनी भी अच्छी रहती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशम भाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सफलता, यश, लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

ऐसा व्यक्ति नीतिज्ञ, शीलवान, विचारशील तथा सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : शुक्र

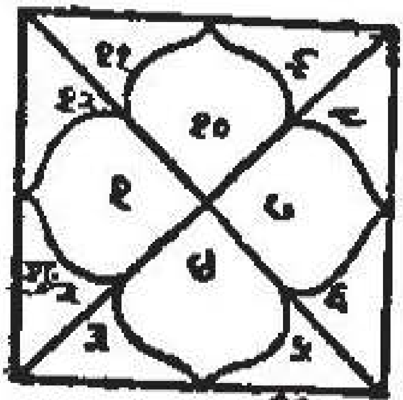

११६१

पाँचवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का यथेष्ट लाभ होता है। पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्रों में भी सफलताएँ मिलती हैं। ऐसा व्यक्ति प्रातः हुकूमत-पसन्द तथा कायदे-कानून माता होता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक की आमदनी यथेष्ट रहती है और वह निरन्तर उन्नति करता चला जाता।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : शुक्र

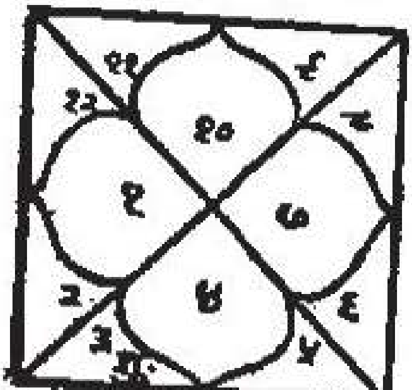

११६२

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभाव रखता है। पिता से कुछ मतभेद के साथ शक्ति प्राप्त होती है तथा राज्य से सम्मान मिलता है किंतु सन्तान तथा विद्या-पक्ष दुर्बल रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, परन्तु बाहरी सम्बन्धों से लाभ मिलता रहता है। ऐसा व्यक्ति दिमागी रूप से भी चिन्तित बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : शुक्र

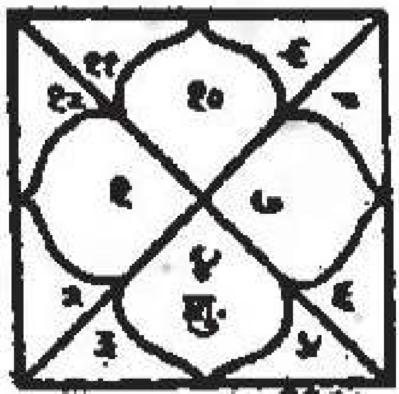

११६३

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को सुन्दर तथा सुयोग्य स्त्री मिलती है। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या पक्ष से भी सुख मिलता है। घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। राजकीय तथा सामाजिक क्षेत्र में प्रतिष्ठा भी मिलती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : अष्टमभाव : शुक्र

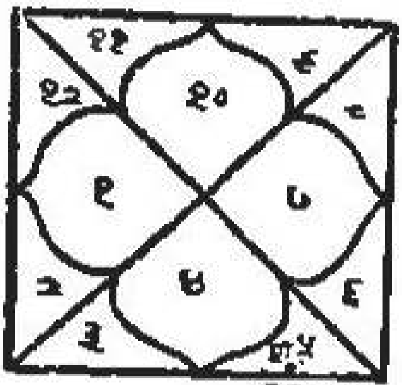

११९७

आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पुरातत्त्व एवं आयु की शक्ति का लाभ होता है। पिता तथा सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है एवं राज्य तथा विद्या का क्षेत्र त्रुटिपूर्ण रहता है।

सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर उन्नति करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : नवमभाव : शुक्र

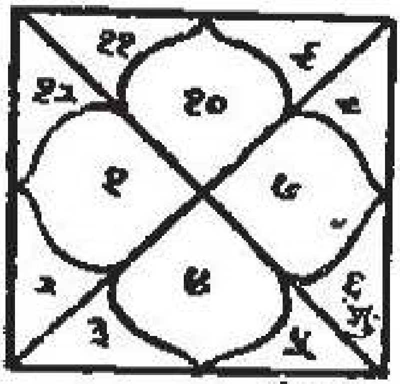

११९८

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित नीच के 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति तथा धर्म-पालन में बाधाएँ आती हैं। पिता, राज्य, व्यवसाय, सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं उच्च तथा शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से तरक्की करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : दशमभाव : शुक्र

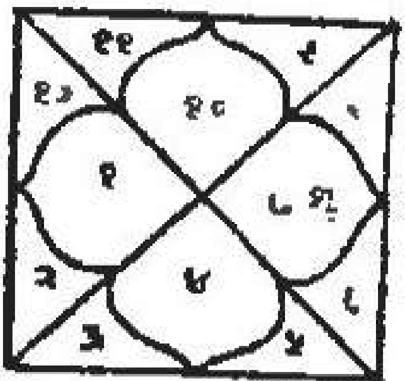

११९९

दसवें भाव में स्वराशि-स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। सन्तान तथा विद्या-पक्ष भी प्रबल रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है तथा घरेलू जीवन उल्लासमय बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : एकादशभाव : शुक्र

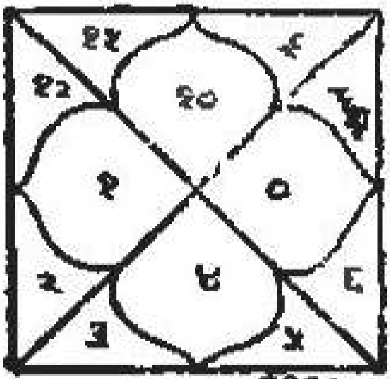

११९७

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में स्थित पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि का भी श्रेष्ठ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी योग्यता के बल पर तरक्की करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शुक्र' का फलादेश

मकर लग्न : द्वादशभाव : शुक्र

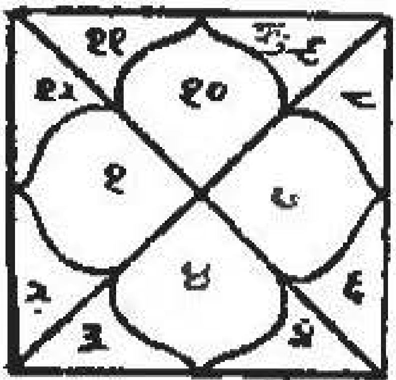

११९८

बारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शुक्र' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता रहता है। पिता पक्ष से हानि, सन्तान-पक्ष से कष्ट तथा विद्या-पक्ष में कमी रहती है। मानसिक चिन्ताएँ बनी रहती हैं।

सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष में चतुराई से काम निकलता है। ऐसे व्यक्ति को उन्नति करने में कुछ विलम्ब लगता है।

'मकर' लग्न में 'शनि'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : प्रथमभाव : शनि

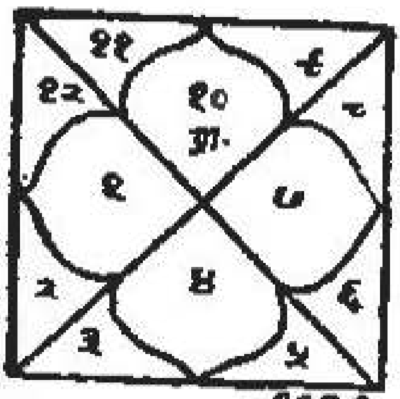

११९९

पहले भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। वह स्वाभिमानी तथा यशस्वी भी होता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परन्तु भाई-बहिनों से असन्तोष रहता है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तम भाव को देखने से स्त्री से असन्तोष रहता है तथा व्यवसाय की वृद्धि के लिए प्रयत्न करता है। दसवीं उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सहयोग, यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : शनि

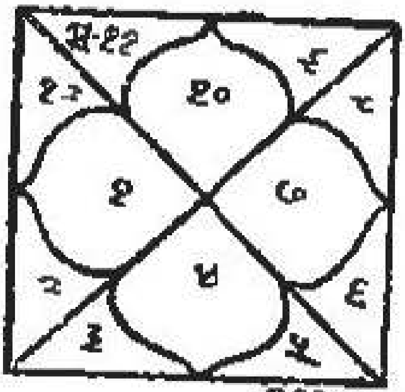

११८०

दूसरे भाव में स्वराशि-स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की धन-संचय एवं कौटुम्बिक सुख का यथेष्ट लाभ होता है। तीसरी नीच-दृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि एवं भवन के सुख में कमी रहती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की कुछ हानि होती हैं। दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादश भाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ आमदनी में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : शनि

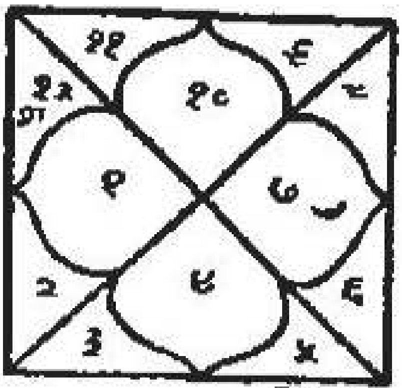

११८१

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को कुछ कठिनाई के साथ भाई-बहिन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में अत्यधिक वृद्धि होती है। पुरुषार्थ के बल पर धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कुछ कठिनाई के साथ लाभ मिलता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : शनि

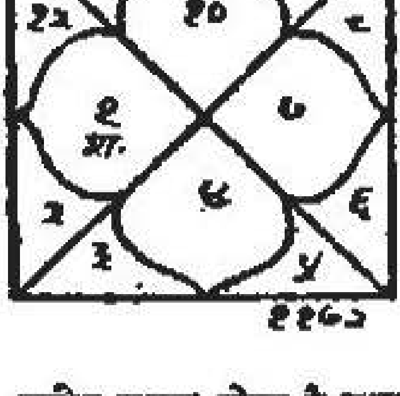

११८२

चौथे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित नीच के 'शनि' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। शारीरिक सौन्दर्य एवं धन-कुटुम्ब का सुख भी कम ही मिलता है। तीसरी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़ों से लाभ होता है।

सातवीं उच्चदृष्टि से दशम भाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथमभाव को देखने से शरीर सुन्दर होता है तथा आत्मबल की अधिकता पाई जाती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : शनि

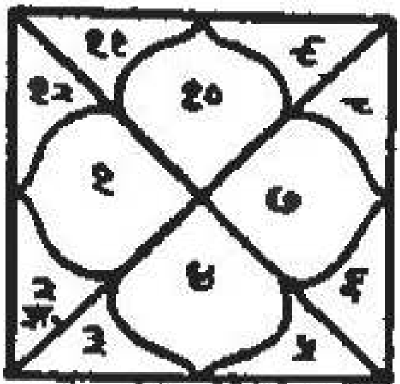

११७३

पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की सन्तान, विद्या तथा बुद्धि का विशेष लाभ होता है। शारीरिक सौन्दर्य, वाणी तथा योग्यता की भी प्राप्ति होती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री से कुछ असंतोष रहते हुए भी उसमें अधिक अनुरक्ति होती है तथा व्यवसाय-पक्ष में भी कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है।

सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में कठिनाइयाँ आती हैं। दसवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुम्ब के सुख में वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : षष्ठभाव : शनि

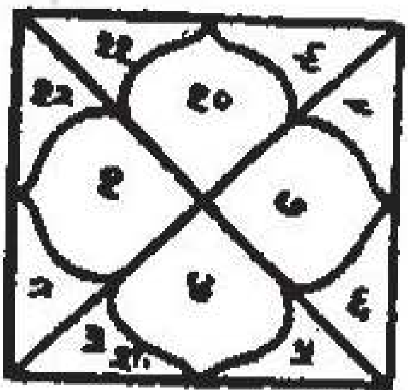

११७४

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कुछ कमी रहती है। शत्रु-पक्ष पर प्रभाव बढ़ता है। कुटुम्ब से सामान्य विरोध रहता है तथा धन-संग्रह में कमी आती है।

तीसरी शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व का अधिक लाभ नहीं होता। सातवीं शत्रुदृष्टिसे द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से सम्बन्ध बनता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहिनों से कुछ वैमनस्य रहता है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : सप्तमभाव : शनि

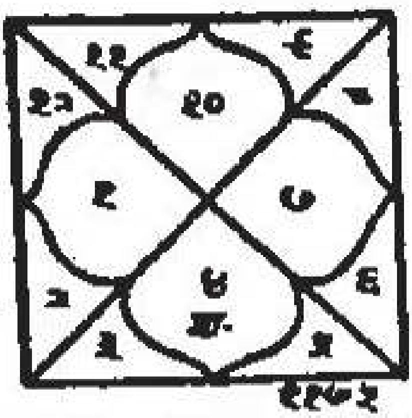

११७५

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से शक्ति एवं आत्मीयता मिलती है तथा परिश्रम के द्वारा व्यवसाय में उन्नति होती है। धन तथा सन्तान का सुख भी मिलता है। तीसरी मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से जातक के भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होती है तथा स्वाभिमान एवं प्रभाव का लाभ होता है। दसवी नीच तथा शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखनेसे माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : अष्टमभाव : शनि

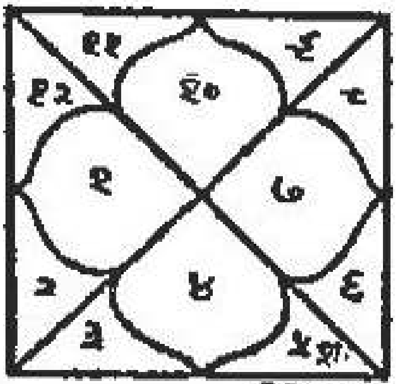

११७६

आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा धन-कुटुम्ब की हानि पहुँचती है। तीसरी उच्चदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलताएँ मिलती हैं।

सातवीं दृष्टि से स्वराशि में द्वितीय भाव को देखने से धन-कुटुम्ब का अल्प सुख मिलता है। दसवीं मित्रदृष्टि से पंचम भाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं सन्तान-पक्ष की वृद्धि होती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : नवमभाव : शनि

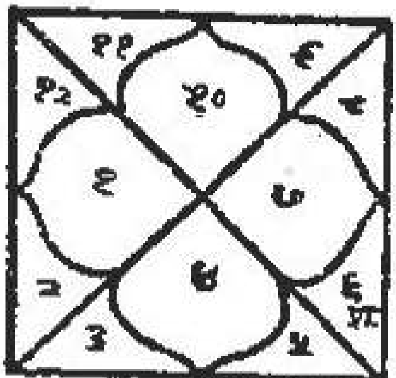

११७७

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म की पर्याप्त उन्नति होती है। शारीरिक प्रभाव, सम्मान तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के मार्ग में कुछ कठिनाइयाँ आती हैं।

सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीय भाव को देखने से भाई-बहिन के सुख में कमी आती है, परन्तु पराक्रम की वृद्धि होती है।

दसवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से धन एवं शारीरिक शक्ति के बल से शत्रु-पक्ष पर विजय मिलती है तथा झगड़े के मामलों से लाभ होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : दशमभाव : शनि

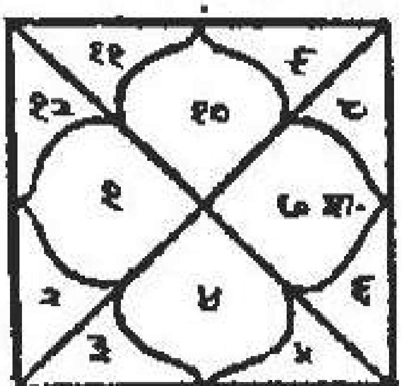

११७८

दसवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित उच्च के 'शनि' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सुख, सहयोग, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी यथेष्ट मिलता है। तीसरी शत्रु-दृष्टि से द्वादश भाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी सम्बन्धों से असन्तोष रहता है।

सातवीं नीचदृष्टि से चतुर्थ भाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री-सुख में कुछ कमी तथा व्यवसाय-पक्ष में कुछ परेशानियाँ आती हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : एकादशभाव : शनि

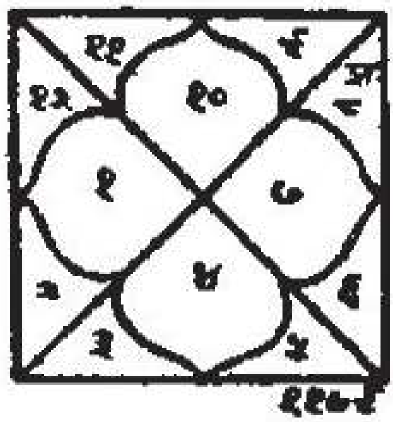

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। धन तथा कुटुम्ब का सुख भी मिलता है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में प्रथम भाव को देखने से शारीरिक सौन्दर्य, यश, प्रतिष्ठा, आत्मबल तथा प्रभाव की प्राप्ति होती है।

सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से सन्तान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी यथेष्ट सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टम भाव को देखने से आयु के विषय में चिन्ता रहती है तथा पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'शनि' का फलादेश

मकर लग्न : द्वादशभाव : शनि

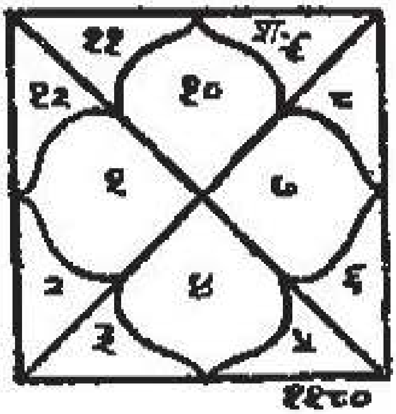

बारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'शनि' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ होता है। धन, कुटुम्ब तथा शारीरिक स्वास्थ्य के सुख में कमी आती है।

तीसरी दृष्टि से स्वराशि में द्वितीयभाव को देखने से धन-प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखने से शत्रु-पक्ष पर प्रभाव स्थापित होता है तथा झगड़े के मामलों में विजय मिलती है।

दसवीं मित्रदृष्टि से नवम भाव को देखने से भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी तथा भाग्यवान् होता है।

'मकर' लग्न में 'राहु'

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'प्रथमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : प्रथमभाव : राहु

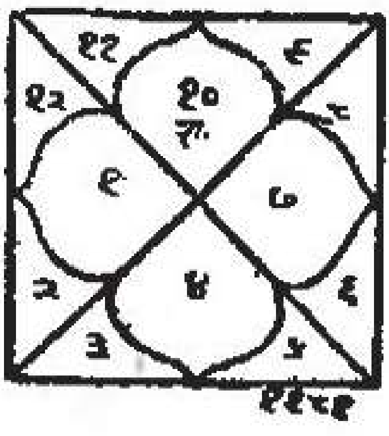

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है। कभी शरीर में चोट भी लगती है। कभी कोई विशेष रोग भी होता है।

ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, चतुर, सतर्क तथा युक्ति-बल से अपने प्रभाव की वृद्धि करने वाला होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वितीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : द्वितीयभाव : राहु

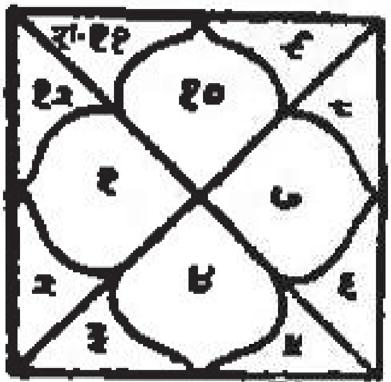

९१९८२

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुम्ब के कारण चिन्तित रहता है तथा कष्ट भोगता है। कभी-कभी ऋण भी लेना पड़ता है। प्रकट रूप से वह धनी समझा जाता है, परन्तु यथार्थ में धन की कमी रहती है। बाद में गुप्त युक्तियों के बल पर वह अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ भी बना लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : तृतीयभाव : राहु

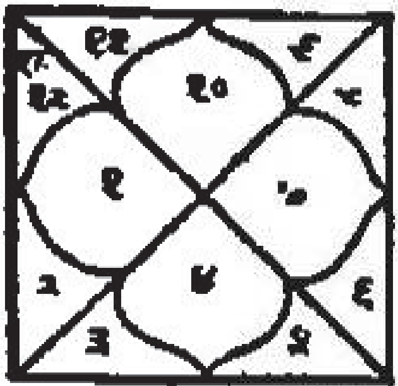

९१९८३

तीसरे भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों की ओर से कष्ट मिलता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है। भीतर से दुर्बलता अनुभव करने पर भी वह प्रकट रूप में बड़ा हिम्मती होता है तथा कठिनाइयों पर विजय पाता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : चतुर्थभाव : राहु

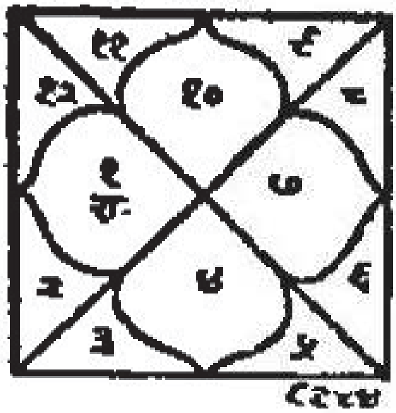

९१९८४

चौथे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी रहती है। कभी मातृभूमि का त्याग भी करना पड़ता है। अन्त में वह गुप्त युक्तियों के बल पर सुख तथा प्रभाव की वृद्धि करता है। ऐसा व्यक्ति हिम्मती तथा धैर्यवान् होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकर लग्न : पंचमभाव : राहु

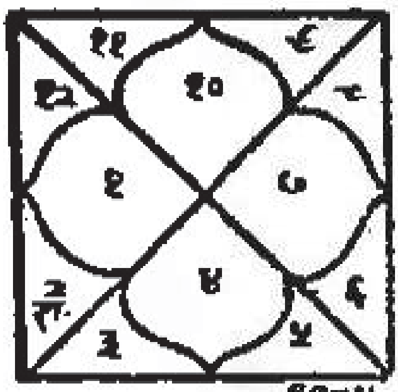

९१९८५

पाँचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को सन्तान-पक्ष से कष्ट होता है तथा विद्या ग्रहण करने में भी कठिनाई आती है। परन्तु उसकी बुद्धि बड़ी तीव्र होती है।

वह होशियार तथा गुप्त युक्तियों में प्रवीण होता है। अन्त में, सन्तान तथा विद्या दोनों ही क्षेत्रों में सफलता भी पा लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : राहु

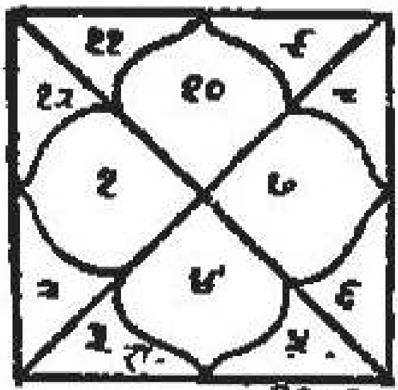

११८६

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर अपना विशेष प्रभाव रखता है तथा झगड़ों के मामलों में सफलता प्राप्त करता है।

वह कूटनीतिज्ञ, विवेकी, तीव्र-बुद्धि तथा गुप्त युक्तियों का जानकार होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः कभी बीमार नहीं होता।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : राहु

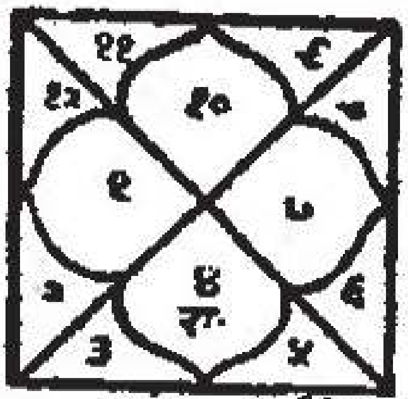

११८७

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से महान् कष्ट होता है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। उसकी मूत्रेन्द्रिय में रोग भी होता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल से कठिनाइयों पर कुछ विजय भी पा लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : राहु

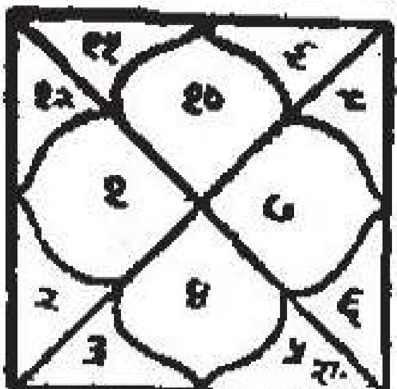

११८८

आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक के जीवन पर बड़े संकट आते हैं तथा कभी-कभी मृत्यु-तुल्य कष्ट को भोगना पड़ता है। पुरातत्त्व की हानि भी होती है। उदर अथवा गुदा-सम्बन्धी रोगों का शिकार बनना पड़ता है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर जैसे-तैसे जीवन-यापन करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : राहु

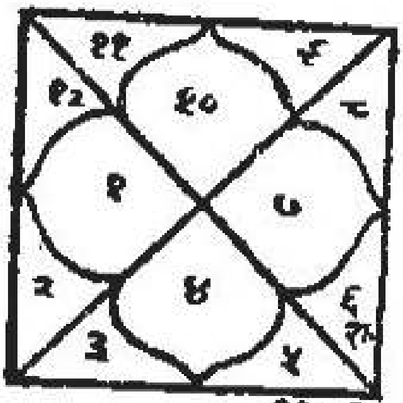

११२८९

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में निरन्तर बाधाएँ आती रहती हैं। कभी-कभी विशेष कठिनाइयों का शिकार भी बनता है। धर्म-पालन में भी कमी रहती है।

कठिन संघर्ष, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर वह थोड़ी-बहुत उन्नति भी कर लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : राहु

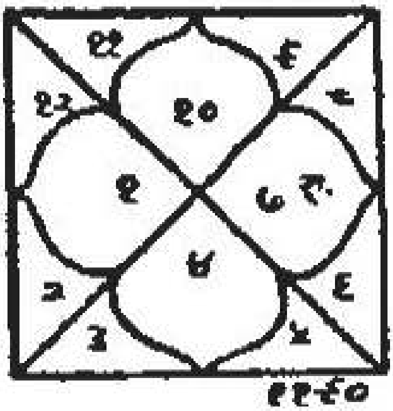

११२९०

दसवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विघ्नों बाधाओं का सामना करना पड़ता है। परन्तु वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर उन्हें दूर करता हुआ भाग्य को उन्नत बनाता है। यद्यपि उसे अनेक बार संकटों में घिर जाना पड़ता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : राहु

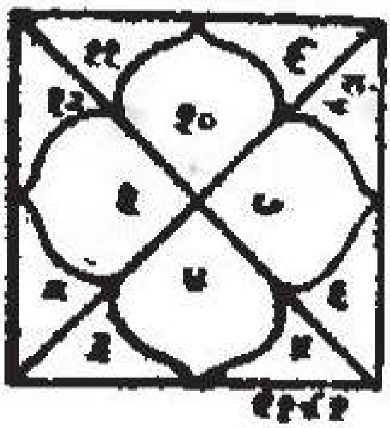

११२९१

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'राहु' के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम तथा गुप्त युक्ति-बल द्वारा विशेष लाभ प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे बड़ी हानि भी उठानी पड़ती है तो कभी विशेष लाभ भी होता है। उसके जीवन में सुख-दुःख आते-जाते बने रहते हैं।

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'द्वादशभाव' स्थित 'राहु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : राहु

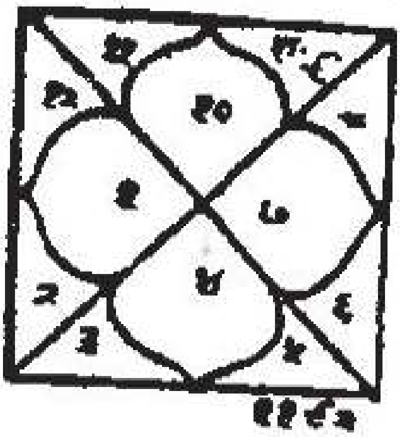

बारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित नीच के 'राहु' के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्धों से भी कष्ट उठाने पड़ते हैं।

हिम्मती होने के कारण वह अपनी कठिनाइयों को प्रकट नही होने देता तथा उन्हें दूर करने की विशेष परिश्रम करता रहता है।

'मकर' लग्न में 'केतु'

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'प्रथमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : प्रथमभाव : केतु

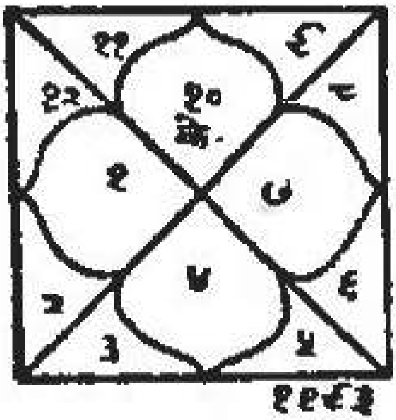

पहले भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा कभी कोई बड़ी चोट लगने की संभावना भी रहती है।

ऐसा व्यक्ति उग्र तथा जिद्दी स्वभाव का होता है तथा अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय भी लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली में 'द्वितीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वितीयभाव : केतु

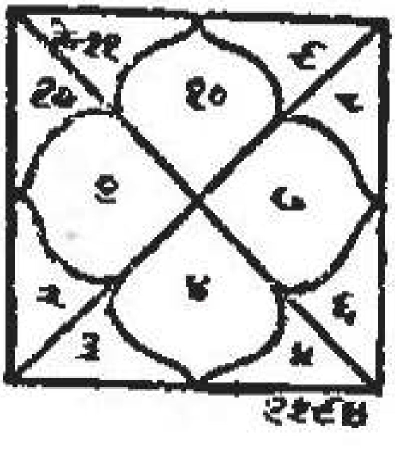

दूसरे भाव में मित्र 'शनि' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुम्ब के विषय में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु वह हिम्मत तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर धन-सम्बन्धी कमी को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'तृतीयभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : तृतीयभाव : केतु

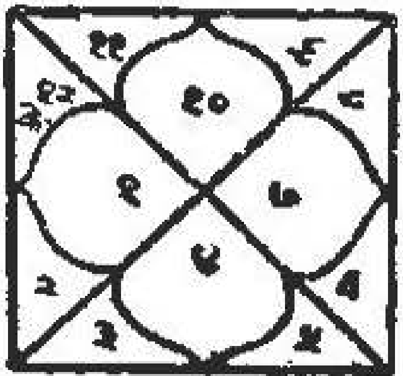

११९५

तीसरे भाव में शत्रु 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को भाई-बहिनों के पक्ष में परेशानी तथा संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है।

वह साहस, धैर्य, पुरुषार्थ तथा गुप्त युक्तियों के बल पर जीवन को प्रभावशाली बनाये रखने का प्रयत्न करता रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'चतुर्थभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : चतुर्थभाव : केतु

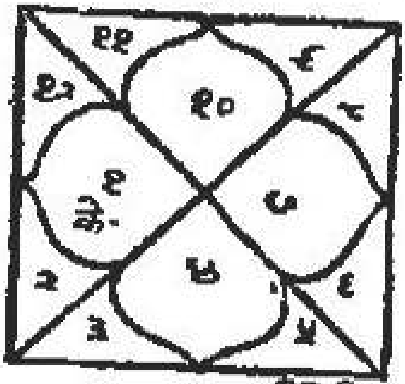

११९६

चौथे भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कमी तथा माता के कारण ही कष्ट भी प्राप्त होता है। घरेलू जीवन कलहपूर्ण रहता है। मातृ-भूमि का त्याग भी करना पड़ता है। अन्त में, कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर उसे सुख के साधन प्राप्त करने में थोड़ी-बहुत सफलता मिल जाती है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'पंचमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : पंचमभाव : केतु

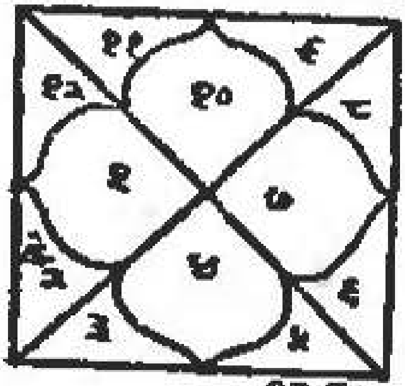

११९७

पांचवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को सन्तान तथा विद्या के क्षेत्र में कमी का शिकार होना पड़ता है। मस्तिष्क में गुप्त चिन्ताओं का निवास रहता है। परन्तु उसकी बुद्धि तीक्ष्ण होती है, अतः वह चतुराई से काम लेकर अपनी कठिनाइयों के निवारण का प्रयत्न करता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'षष्ठभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : षष्ठभाव : केतु

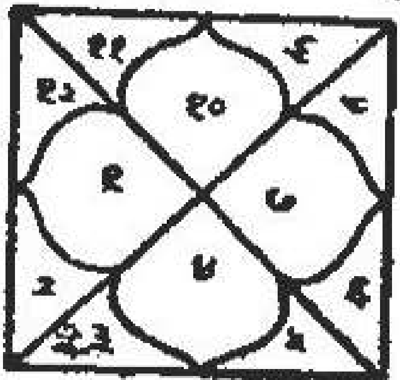

११९८

छठे भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को शत्रुओं के कारण कठिनाइयों में फँसना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर वह उन पर विजय भी पा लेता है। झगड़े-झंझट के मामलों में उसे सफलता मिलती है। ननसाल-पक्ष की हानि पहुँचती है। घोर संकट आने पर भी वह अपना धैर्य नहीं छोड़ता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'सप्तमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : सप्तमभाव : केतु

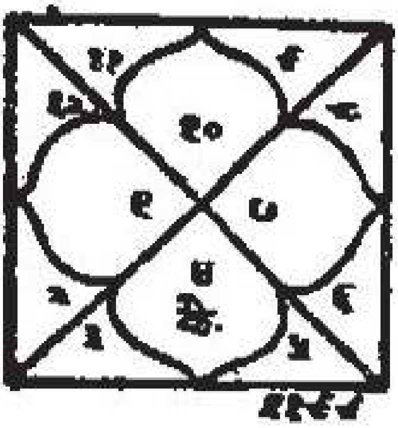

सातवें भाव में शत्रु 'चन्द्रमा' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से अनेक प्रकार के कष्ट प्राप्त होते हैं। गृहस्थ-जीवन में परेशानियाँ आती हैं। अनेक प्रकार के व्यवसाय करने पर भी कठिनाइयाँ आती रहती हैं। अन्त, में वह अपनी गुप्त युक्तियों तथा कठोर परिश्रम के द्वारा उन पर यथोचित सफलता भी पा लेता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'अष्टमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : अष्टमभाव : केतु

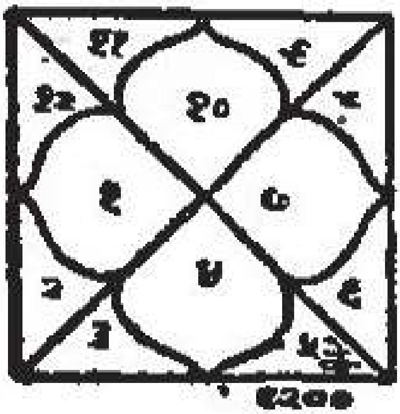

आठवें भाव में शत्रु 'सूर्य' की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के जीवन पर अनेक बार संकट आते हैं और वह मृत्यु-तुल्य कष्ट पाता है। पेट में विकार रहता है।

आजीविका-उपार्जन के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। भीतर से चिन्तित रहते हुए भी प्रकट में वह प्रभाव प्रदर्शित करता है। प्रायः उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'नवमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : नवमभाव : केतु

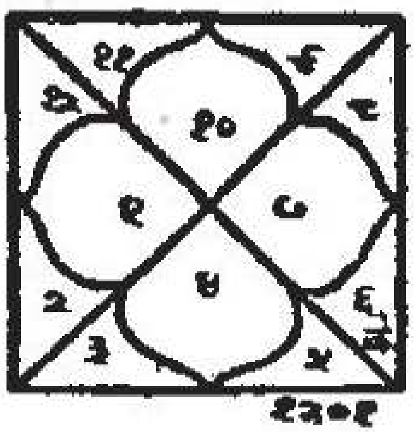

नवें भाव में मित्र 'बुध' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयाँ आती हैं, परन्तु वह अपनी हिम्मत, परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा उन पर विजय पाकर भाग्य की उन्नति तथा धर्म का पालन करता है। कभी-कभी उसे भाग्य-क्षेत्र में घोर संकटों का सामना करना पड़ता है, परन्तु अन्त में उनका निराकरण करने में सफल हो जाता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'दशमभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : दशमभाव : केतु

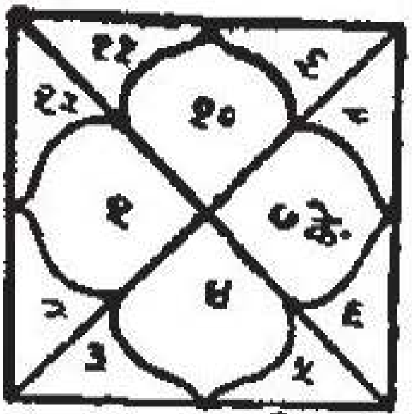

१२०२

दसवें भाव में मित्र 'शुक्र' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक को पिता से कष्ट, राज्य से कठिनाइयाँ तथा व्यवसाय-क्षेत्र में संकटों का शिकार बनना पड़ता है, परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर वह उन पर विजय पा लेता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन संघर्षपूर्ण तथा परिवर्तनशील होता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'एकादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : एकादशभाव : केतु

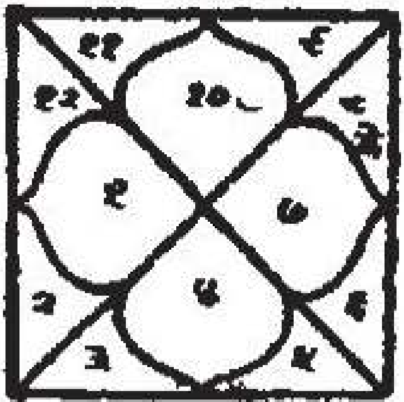

१२०३

ग्यारहवें भाव में शत्रु 'मंगल' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होती है। वह अपनी गुप्त युक्तियों, साहस एवं कठिन परिश्रम के बल पर आमदनी को निरन्तर बढ़ाता रहता है। आने वाली कठिनाइयों पर उसे विजय मिलती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त रूप में चिन्तित भी बना रहता है।

'मकर' लग्न की कुण्डली के 'द्वादशभाव' स्थित 'केतु' का फलादेश

मकरलग्न : द्वादशभाव : केतु

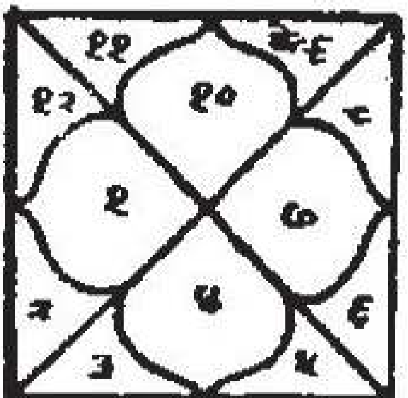

१२०४

बारहवें भाव में शत्रु 'गुरु' की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अत्यधिक रहता है, परन्तु बाहरी स्थानों से उसे लाभ मिलता है।

ऐसा व्यक्ति कठिनाइयों का साहस के साथ सामना करता है तथा अन्त में उन पर विजय भी पा लेता है। वह बड़ा परिश्रमी, धैर्यवान्, गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला तथा साहसी होता है।